उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
'पद'

कवि - गोस्वामी तुलसी दास

कबहुँक अंब अवसर पाइ।
मेरिऔ सुधि द्याइबी कछु करुन-कथा चलाइ।।
दीन, सब अँगहीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ।।
- -
- -
तरै तुलसीदास भव तव-नाथ-गुन-गान गाइ।।

भावार्थ

प्रस्तुत पंक्तियाँ संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास रचित 'विनय-पत्रिका' काव्य कृति से ली गयी है। विनय पत्रिका की रचना करने के पीछे कवि का उद्देश्य यह है कि कविता रूपी पत्र के माध्यम से अपनी दीनता, पीड़ा व्यथा को प्रभु श्रीराम के चरणों में पहुँचना है। इसमें सभी देवों की स्तुतियाँ की गयी है और उन्हीं के माध्यम से प्रभु के प्रति भक्ति-भावना भी प्रदर्शित की गयी है।

उपर्युक्त पंक्तियों में माता सीता की वंदना करते हुए कवि विनती करता है कि हे माँ! कभी अवसर पाकर मेरी विनती प्रभु श्रीराम के चरणों में प्रस्तुत करना। मेरी करुण कथा की चर्चा करते हुए मेरे प्रति प्रभु-कृपा के लिए याद दिलाना। उन्हें याद दिलाते हुए कहिएगा कि आपकी दासी का एक भक्त आपका नाम-जप एवं भजन के द्वारा अपनी जीविका चला रहा है। मेरी दीन-हीन अवस्था की सुधि श्रीराम को छोड़कर और कौन लेगा? श्रीराम की कृपा अगर हो जायेगी तो मेरी दीन-दशा सुधर जायेगी। हे जगत की जननी, मेरी तुमसे विनती है कि अपनी कृपा कर मुझ असहाय की सहायता करो। तुलसीदास भव सागर पार कराने वाले प्रभु श्रीराम का गुण-गान करते हुए दीनता से मुक्ति के लिए प्रार्थना करते है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
दूसो० प्रो० हिन्दी
रा० ऊ० सं० महा विद्यालय [illegible], पूर्णियाँ

06/09/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

जयद्रथ-वध

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

"हे हे परन्तप! ताप सहकर चित्त में धीरज धरो,
हे धीर भारत! हो न आरत! शोक को कुछ कम करो।
पड़ता समय है वीर पर ही, भीरु-कायर पर नहीं,
दृढ़-भाव अपना विपद में भी भूलते बुधवर नहीं।

भावार्थ

वीर अभिमन्यु की मृत्यु के दुःख से दुखी अर्जुन को देखकर भगवान श्रीकृष्ण दुःखी हो जाते हैं और वे फिर पाण्डवों को सांत्वना देते हुए कहते हैं कि तुम लोग अपने मन में धैर्य धारण करके इस दुःख को सहन करो। इस संसार में अधिक दुःखी न हो। हे धैर्यवान अपने दुःख को कुछ कम करने का प्रयत्न करो। इस जगत में वीरों पर ही कठिन समय पड़ता है। डरपोक और कायरों के सामने ऐसी स्थिति कभी नहीं आती। वीर ही सदैव खतरों को चुनौती दिया करते हैं। कायर और डरपोक नहीं। अतः तुमको अपना दृढ़ भाव ही प्रत्येक परिस्थिति में प्रकट करना चाहिए। क्योंकि वीर कठिन समय में भी इसे नहीं भूलते हैं।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि का कहने का भाव यह है कि वीर पुरुष जो सदैव प्राण हथेली पर रखे हुए काम किया करते हैं उनके सामने ही ऐसी स्थिति आ सकती है। जो किसी प्रकार के खतरा उठाने के लिए तैयार ही नहीं होते उनके समक्ष ऐसी स्थिति आती ही नहीं है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
06/09/20

रहता है। परन्तु देहात से जाने वाला देहाती राजनीतिज्ञ इस चंचला की प्रकृति को पहचान नहीं पाता और वह पिट जाता है। दिनकर जी की यह स्थिति हुई थी। औरों की भी यही दशा होती है, और होती रहेगी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
06/09/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
निबंधमाला – गद्य खण्ड
शीर्षक:– दिल्ली, दिनकर और कुम्हार का चाक
लेखक:– प्रो० प्रमोद कुमार सिंह

प्रश्न:– 'दिल्ली, दिनकर और कुम्हार का चाक' शीर्षक निबंध के आधार पर दिनकर जी का संक्षिप्त परिचय दीजिए। शेषभाग –

उत्तर:– दिनकर जी जब गंगातट की मिट्टी छोड़कर दिल्ली आए तो उन्हें इस रेशमी नगर में चिनांशुक भी चुभने लगी। इनके भीतर जो सिरजनहार था वह यमुना तट का रसिया नहीं बन सकता था। परिणामत: इन्हें सम्पूर्ण दिल्ली में खोजने पर भी कुम्हार का कोई चाक दिखाई नहीं पड़ा। दिनकर जी चूँकि देहात की मिट्टी से आये थे, इसलिए मिट्टी के प्रजापति को ढूँढ रहे थे, परन्तु इसमें दिल्ली प्रवास की वह चतुराई नहीं थी जो रहीम में थी। रहीम को चाक मिला था। दिनकर जी को वह कहीं दिखलाई नहीं पड़ा। इन्हें दिल्ली का तिलिस्म भी नहीं समझ में आया। अत: वे राजसभा में जनता को चक्रवर्ती बनाने के लिए हुँकार भरने लगे - सिंहासन खाली करो की जनता आती है।

दिल्ली किसी की नहीं है। उसका स्वभाव अप्सरा का है। इसलिए वह न रहीम की रही न दिनकर की। उसने रहीम से तो मधुकरी भी मँगवाई थी। रहीम यह अच्छी तरह जानते थे कि दिल्ली मिट्टी पोतकर देहातिन बन सकती है। कालिदास की जनपद वधू या पन्त की ग्राम्या की तरह। वह जवाहरात छोड़कर निराभरणा कुमारी का स्वांग भी कर सकती है। फिर भी दिल्ली ने रहीम को छला। दिनकर जी को पता नहीं था। वे नौसिखुए थे। इसलिए उन्हें चाक की खोज में खाक छाननी ही थी।

दिनकर जी को यह मालुम नहीं था कि दिल्ली बड़ी बेरहम और बेवफा है। वह अपने यहाँ अपने वालों को अपनी चाल-ढाल में इस तरह मोहित कर उसका शोषण कर लेती है जैसा कि मिट्टी का नया बर्तन उत्कंठित जल को ~~स~~ सोख लेता है।

दिल्ली में आज भी उसका चक्र चलता है। राजनीतिक पात्रों का सृजन और संहार इस चाक पर होता

शेष आगे –